३५: सत्यता-११: जागृत जीवन ही नियम है

दिनांक -११/१२/२०११

जागृत जीवन ही नियम है | भ्रमित मानव अर्थात प्रलोभन से ग्रसित मानव, दूसरा भाषा में लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद में फंसा मानव भी सभी प्रकार के अपराध करता है | यह भी सुखी होने के अर्थ में ही करता है | सुखी हो नहीं पाता यही मजबूरियां हैं | इस अध्ययन से यह पता लगता है कि सुधरने की इच्छा सब में है | सम्भावना की अपेक्षा के रूप में अभी तक मानव जात के सम्मुख प्रथम विधि चेतना विकास मूल्य शिक्षा ही दिखती है | दूसरा विधि अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान है | तीसरा विधि मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद ही है | चौथा विधि विकल्प है | इन सब का आशय एक ही है | विकल्प का मतलब ही यही है जो कि मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद का है | इनका मतलब भ्रम मुक्ति, अपराध मुक्ति से है | इसका प्रधान विधि शिक्षा ही है | शिक्षा विधि से लोकव्यापीकरण होने का प्रस्ताव है | दूसरा कोई विधि से लोकव्यापीकरण सम्भव नहीं है | विगत में उपदेश विधि, भाषण विधि, सम्भाषण विधियाँ प्रचलित हो चुकी हैं | ये सभी विधियाँ तत्कालीन विद्वान, बुद्धजीवी, महापुरुष कहलाते रहे यही किये हैं | आजभी वैसे ही कर रहे हैं ये सब कार्य करने वाले | इसके पश्चात शिक्षा प्रदान करने वालों को भी विद्वान माना गया है जबकि शिक्षा अर्थोपार्जन का रास्ता बना है | समझदारी, समाधान का रास्ता नहीं बना | विकल्प से पता चलता है कि समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धि होता है | अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान के आधार पर यह मानना है कि मानव जात ज्ञानावस्था में है |

ज्ञानावस्था के मानव समझदारी से समाधान प्राप्त कर सकता है | श्रम से समृद्धि पा सकता है | यही अपराध-मुक्त जीवन का सामान्य परिचय है अथवा व्यवहारिक परिचय है | व्यवहार गति के परिचय में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज प्रमाण, नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज प्रमाण तथा स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार सहज प्रमाण विधि से ही विद्वता का अथवा समझदारी का स्वीकार होना पाया गया है | इसी आधार पर प्रस्ताव प्रस्तुत है | क्योंकि यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद विधि से मानव जात में कहीं भी समस्याओं से निपटने का अकल तैयार नहीं हो पाया | समस्या से समस्या को निपटने जाते हैं, वो निपटना नहीं है | निपटने का मतलब प्रस्ताव के अनुसार समाधानित होना | हर संघर्ष, युद्ध में दो पक्ष होता ही है | हर समस्या के मूल में दो पक्ष होता ही है | दोनों पक्षों में संतुष्टि होना ही न्याय है | न्याय के बारे में पहले स्पष्ट हो चुका है | विद्वता के बारे में ध्यान देने की आवश्यकता है | विद्वतापूर्वक ही अर्थात जानने मानने के आधार पर ही, दूसरी भाषा में न्याय, धर्म, सत्य को जानने- मानने के आधार पर ही सर्वतोमुखी समाधान पाया गया है | दूसरे विधि से उक्त तीनों प्रकार से प्रमाणित होना ही समाधान है | इसे सर्व देश काल में परीक्षण किया जा सकता है | सामान्य रूप से देखने पर यह आवश्यक लगता है | विचार रूप में देखने पर यह प्रयोजनपूर्ण लगता है | व्यवहार रूप में देखने पर यह दायित्व कर्तव्य लगता है |

इन सभी बातों को देखने पर मानव में स्वीकार करने का आशय बनता है | इन्हीं आशयों से इन सब बातों को प्रस्तुत किया जा रहा है | मानव ज्ञानावस्था में होने के आधार पर बहुमुखी प्रतिभा है | फलस्वरूप समस्याओं में फंसता है | समाधान भी बहुमुखी है | न्याय भी बहुमुखी है | सत्य भी बहुमुखी है | सहअस्तित्व स्वयं में बहुमुखी रूप में प्रस्तुत है अर्थात विकास क्रम विकास, जागृति क्रम जागृति के रूप में प्रस्तुत है | इस प्रकार मानव ज्ञान को बहुमुखी रूप में प्रमाणित करने योग्य है |

इस प्रयोग विधि से वंचित होना ही भ्रम है | भ्रम ही अपराध रूप में मानव परम्परा में पनपा है | यह प्रत्येक व्यक्ति में सोचने, समझने, निर्णय करने का आधार है और कोई आधार होता नहीं | होना नियति विधि है अर्थात सहज विधि है अर्थात मानव का होना नियति सहज विधि है, रहना कार्यक्रम है | कार्यक्रम में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज प्रमाण एक उपलब्धि है जिसके आधार पर जीने से नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य प्रकाशित होता है | यह उपकार है | स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार प्रकाशित, प्रमाणित होता है | यही मानव का प्रयोजन है | इसी से उपकार होता है | उपकार का मतलब ही है पीढ़ी से पीढ़ी हर मानव शिक्षित हो पाना | यही सच्चाई का परम्परा बन पाता है | इस विधि से जागृत जीवन ही जीने का आधार होना अथवा जीने का प्रयोजन होना स्पष्ट होता है | अर्थात जागृत जीवन ही नियम है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत